International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 5 Issue 08, August 2018 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 4.218
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal
Double-

अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों मे नेतृत्व विकास क्षमता का विश्लेषण

Rajesh Kumar[1], Dr. Ramesh Kumar[2]

Department of Education

[1,2]OPJS University, Churu (Rajasthan), India

सार

आज गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए ज्ञान माध्यम की भी महत्ती भूमिका है। शैक्षिक योजना की स्वयं सिध्दी है कि अच्छि शिक्षा अच्छे शिक्षक पर निर्भर करती है और शिक्षक की अच्छाई अध्यापक प्रशिक्षण के गुणवत्ता पर निर्भर करती है। अध्यापक प्रशिक्षण का पमुख उद्देश्य स्वस्थ दृष्टिकोण, विस्तृत रुचि, मूल्य तथा व्यक्तित्व को विकसित करता है। नेतृत्व वर्तन क्षमता व्दारा गुणात्मक परिवर्तन अध्यापक सं व हुआ है और यह परिवर्तन अध्यापक शिक्षा की अब तक की विकसित संरचना मे देखा जा सकता है शिक्षा मे छात्रा को अच्छी शिक्षा प्रदान करना अध्यापक का कर्तव्य है। आज के उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के दौर मे अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों का नेतृत्व वर्तन क्षमता विकसित होना आवश्यक है।प्रस्तुत शोध में सम्बन्धित का अवलोकन किया गया है। इसीमे नेतृत्व और बुध्दिमत्ता का सम्बन्ध है। नेतृत्व विकास के विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर होने के लिए शोधकर्ती ने अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए अध्ययन सन्च स्वय तयार किया है। इसी शोध पर अनुसन्धान नही होने से शोधकर्ती ने इस शोध का चयन किया है।

1. प्रस्तावना

शिक्षण के सभी पक्षों में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी व्दारा नये नये आयाम विकसित हो रहे है अध्यापकों को प्रशिक्षण में सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी ज्ञात करना आवश्यक है। अध्यापक प्रशिक्षण का अर्थ अध्यापक का व्यावसायिक विकास के लिए प्रेरणा प्रदान की जाती है। सामाजिक नेतृत्व में वस्तुनिष्ठता अथवा किसी भी प्रकार के रागद्वेष व अभिनति के बिना अध्ययन नहीं हो पाता। नेतृत्वकर्ता चूकी स्वयं किसी समाज का सदस्य होता हैं जिसे अनेकानेक विचार, आदर्श भावनाएँ, मूल्य आदि व्यक्तिनिष्ठ तत्व प्रभावित किए रहते है, अतः यह आशा करना कि वह पूर्णतया पक्षपातहीन होकर अपना नेतृत्व करेगा निरर्थक ही होगा। हम अपने ही देश में देखें तो ज्ञात होता है कि, समाज नेतृत्व के कई अध्ययनों से निकले हुए तथ्य त्रुटीपूर्ण हो रहे है। नेतृत्वकर्ता जाने या अनजाने में अपनी जाति, धर्म, वर्ग, व्यवसाय, राष्ट्रीयता आदि के कारकों से प्रभावित होकर वस्तुनिष्ठता खो बैठे है। कई पश्चिमी देशों को समाज राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक अभिनति, बौध्दीक उच्चता आदि की भावना से प्रभावित होकर अपने देशो में व अन्य विकासोन्मुख देशो में जाकर अध्ययन करते रहे है। अनेक वर्षो के अनुभव के फलस्वरूप यह बतलाने में समर्थ हो गए है कि किन परिस्थितियों में नेतृत्व की विशेषताएँ दिखलाएँगे और उनके वर्तन प्रायः आदर्श ही उतरते है। नेतृत्वकर्ता की कुशलता पर प्रायः प्राकृतिक वैज्ञानिक यह कठोर प्रहार करते है कि समाज विज्ञान सामाजिक घटनाओं का सही नापतोल प्रस्तुत नही कर सकता।

2. संबंधित साहित्य

श्रीधर,वाइ.एन.एवंराजवी,एच.आर. (2008) ने मैसैसूर शहर के **61**विभिन्न प्रब्रबन्ध समूहों ं के माध्यमिक विद्यालयों ं के **256** अध्यापकों कीआत्म–क्षमता का परीक्षण किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि व्यक्तिगतआत्म–क्षमता और विद्यालयों के प्रकार में सार्थक संबंध होता है। अन्यस्कूलों की अपेक्षा नवोदय विद्यालय के शिक्षकों का स्तर उच्च पाया गया।सामान्य शिक्षण आत्म–क्षमता में विभिन्न विद्यालयों के शिक्षको में सार्थकअन्तर नहीं पाया गया। 30 वर्ष से कम उम्र वाले शिक्षकों, 51 वर्ष सेअधिक उम्र वाले शिक्षकों, अधिस्नातक योग्यताधारी शिक्षकों, 21 वर्ष सेअधिक अनुभव वाले शिक्षकों, विज्ञान शिक्षकों व महिला शिक्षकों में अपनेविपरीत समूहों की तुलना में उच्च व्यक्तिगत आत्म–क्षमता व उच्चसामान्य शिक्षण आत्म–क्षमता पायी गयी ।

निलगुन,येनीस (2009) ने विज्ञान अध्यापकों ं के आत्म–क्षमता स्तर कामूल्ल्यांकंकन विज्ञान शिक्षण के संबंबंध में कुछ चरो के साथ किया। विज्ञानशिक्षकों की शिक्षण क्षमता और आत्म–क्षमता–विश्वास का स्तर कैसेपरिवर्तित होता है इसके निर्धारण को इस अध्ययन में प्रमाणित कियागया। इस अध्ययन में पाये गये तथ्यों के अनुसार विज्ञान शिक्षकों कीशिक्षक आत्म–क्षमता, लिंग, आयु, वरिष्ठता, साप्ताहिक पाठ कार्यभार,सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त करने एवं कार्य संतुष्टि के आधार पर परिवर्तितनहीं होती है। जब शिक्षकों का आत्म–क्षमता–विश्वास भिन्न–भिन्न न होतो यह वरिष्ठता एवं साप्ताहिक पाठ कार्यभार के आधार पर पर्याप्तपरिवर्तन दिखाता है।

राव,के.एस. और हसीना एस. (2009) ने आन्ध्रप्रदेश के चित्तूर जिले केशहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के **120** प्राथमिक शिक्षकों के मध्यआत्म–क्षमता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में प्राथमिक शिक्षकों कीआत्म–क्षमता पर लिंग और क्षेत्र के प्रभाव का मूल्यांकन करने का एकप्रयास किया गया। अध्ययन में पाया कि (प) आवास के क्षेत्र का प्राथमिकविद्यालयों के शिक्षकों की आत्म–क्षमता पर सार्थक प्रभाव होता है। (पप)लिंग भेद प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आत्म–क्षमता पर कोई प्रभावनहीं डालता (पपप) प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आत्म–क्षमता केसंदर्भ में लिंग भेद एवं आवास के क्षेत्र के बीच सार्थक अन्तःक्रिया पायीगयी।

हमीद,ए. और मन्जुषा,एम. (2010) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों कीशिक्षण शैली और संगंठनात्मक वातावरण के संबंध में शिक्षकआत्म–क्षमता की खोजेज की। न्यादर्श में केरल के तीन जिलो– मालापुरम,कोजीकोड एवं त्रिसुर के 370 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को शामिलकिया। निष्कर्ष के मुख्य बिन्दु निम्न लिखित रहे– (1) महिला एवं पुरूषोंकी शिक्षक आत्म–क्षमता में सार्थक अन्तर देखने में आया जबकि क्षेत्रएवं प्रबंधन के प्रकार के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (2) शिक्षक आत्म–क्षमता पर मुख्य प्रभाव शिक्षण शैली का सम्पूर्ण न्यादशमें, महिला शिक्षकों, शहरी शिक्षकों, ग्रामीण शिक्षकों एवं सरकारी व गैरसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सार्थक पाया गया। (3) शिक्षकआत्म–क्षमता पर मुख्य प्रभाव संगठनात्मक वातावरण का भी सम्पूर्णन्यादर्श में, महिला शिक्षकों, शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों व सरकारीविद्यालयों के शिक्षकों में सार्थक पाया गया। (4) शिक्षण शैली तथासंगठनात्मक वातावरण का शिक्षक आत्म–क्षमता के साथ सम्पूर्ण न्यादर्श,लिंग, क्षेत्र एवं प्रबन्धन में कोई सार्थक अन्तःक्रिया नहीं पायी गयी।

डॉ.ए.वी.करावासानागौदरा (2011) प्रवक्ता, साना कॉलेज ऑफ एजुकेशन,भैरीदेवाराकोपा, हुबली का अध्ययन ''संस्था प्रधानों का प्रश्शासनिकव्यवहार''34 शोधकर्त्ताओं, शिक्षक–प्रशिक्षकों, शैक्षिक अधिकारियों एवं अन्य को इस उपेक्षित क्षेत्र को नजदीकता से एवं सही तरीके से समझने मेंमददगार होगा। यह स्वयं माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानों को अपनेप्रशासनिक व्यवहार के भी स्व–विश्लेषण में मददगार होगा। गैरअनुदानित स्कूलों के अध्यापक अनुदानित स्कूलों के बजाय ज्यादासकारात्मक अनुभूति रखते हैं। प्रधानाध्यापकों का ज्यादा प्रजातांत्रिक होनाचाहा गया।

3. शोध विधि एवं प्रक्रिया

3.1 शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्जी ने उद्देश्यपरक प्रोज्यों के मत पर वर्णनात्मक स्वरूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है, क्योंकि सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षण एक समस्या से सम्बन्धित आंकड़ों के संकलन का एक महत्त्वपूर्ण साधन व उपकरण है।

3.2 प्रदतों का संकलन

नेतृत्व विकास के अध्यापक शिक्षकों को व्दारा रेटिंग श्रेणी और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों का नेतृत्व विकास मापन के लिए रेटिंग श्रेणी अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के नेतृत्व विकास मापन करने के लिए रेटिंग श्रेणी डॉ. जॉन स्मिथ ने प्रमाणित की है। Bratram (2004)शिक्षा शास्त्री ने Leadership potential indicator इस पर आधारित अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों का नेतृत्व विकास का मापन करने के लिए रेटिंग श्रेणी तयार की गयी है। डॉ. जॉन स्मिथ ने रेटिंग श्रेणी European federation of (EFPA) and the Americal psychological Association (APA)इस संस्था से सौदेश्यपूर्णता और विश्वसनीयता परीक्षण किया है। इस आधारपर अध्यापक शिक्षकों से नेतृत्व विकास के लिए घटक निश्चित किये गए है।

3.3 न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ती ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर अंतर्गत ४० अध्यापक महाविद्यालयों मे से १/४ ऐसे १० अध्यापक महाविद्यालयों का चयन क्रमबध्द यादृच्छिक विधी से किया गया।

4. माहिती विश्लेषण

श्रीमंत महाराणी ताराबाई शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, कोल्हापूर में प्रशिक्षणार्थियों के लिए अध्ययन सन्च का उपयोग करके पश्च परीक्षण के गुणांक प्राप्त संख्या का 't'-मूल्य

अ.नं.	समूह	माध्य	तालिका 't'-मूल्य		प्राप्त 't'-संख्या
			d f = 26कका 't'मूल्य		
			0.05 सार्थकता स्तर	0.05सार्थकता स्तर	
1	प्रयोगात्मक समूह	574.79	2.06	2.78	5.08
2	नियंत्रित समूह	430.71			

निरीक्षण और विवेचन –

तालिका क्र. २ से यह स्पष्ट होता है की, नेतृत्व वर्तन विकास सन्च का उपयोग से नियंत्रित समूह का 't'-संख्या5.08 है। कि.26 है t- संख्या 0.05 और 0.01 स्तर पर सार्थक संख्या है। इसिलिए नेतृत्व वर्तन विकास संच से अध्यापन से परीणामकारक बदलाव होता है।

महावीर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कोल्हापूर में नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च पश्च परीक्षण गुणांक का 't'मूल्य

अ.न.	अभ्यास गट	माध्य	तालिका 4 का 't'मूल्य		प्राप्त 't'-मूल्य
			d f = 18का't'मूल्य		
			0.05सार्थकता स्तर	0.01सार्थकता स्तर	
1.	प्रायोगिक गट	610	2.10	2.88	5.22
2.	नियंत्रित गट	427			

निरीक्षण और विवेचन –

तालिका क्र.4 से यह स्पष्ट होता है की, नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है की नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च का अध्यापन मे अनुसरण से प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण

गुणांक का 't'-मूल्य 5.22 है। इसमे df = 18 मे 't'-मूल्य 0.05 और 0.01 स्तर पर सार्थ है। नेतृत्व वर्तन विकास अध्यापन के लिए परिणामकारक है।

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, कोडोली मे नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च पश्च परीक्षण गुणांक का 't' मूल्य

अ.नं.	अभ्यास गट	माध्य	तालिका 't'- मूल्य		प्राप्त 't'-मूल्य
			d f = 36का't'मूल्य		
			0.05सार्थकता स्तर	0.01सार्थकता स्तर	
1.	प्रायोगिक गट	610	2.02	2.71	6.35
2.	नियंत्रित गट	400.59			

निरीक्षण और विवेचन -

तालिका क्र. 6 से यह स्पष्ट होता है की, नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च का अध्यापन मे अनुसरण से प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण

गुणांक का 't'-मूल्य 6.35 है, df = 36 पर 0.05 और0.01 स्तर पर सार्थ है। नेतृत्व वर्तन विकास का अध्यापन के लिए उपयोग परिणामकारक है।

शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कराड मे नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च पश्च परीक्षण गुणांक का 't'-मूल्य

अ.नं.	अभ्यास गट	माध्य	तालिका 't'- मूल्य		प्राप्त 't'-मूल्य
			df = 36का't'मूल्य		
			0.05सार्थकता स्तर	0.01सार्थकता स्तर	
1.	प्रयोगात्मक समूह	543	2.02	2.71	6.35
2.	नियंत्रित समूह	368.50			

निरीक्षण और विवेचन -

तालिका क्र.8 से यह स्पष्ट होता है की, नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च का अध्यापन मे अनुसरण से प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण गुणांक का 't'मूल्य 30.61 है। df = 38पर 0.5 और 0.01 स्तर पर सार्थ है। नेतृत्व वर्तन विकास का अध्यापन के लिए उपयोग परिणामकारक है।

छत्रपती शिवाजी अध्यापक महाविद्यालय, पश्च परीक्षण गुणांक रुकडी 't'- मूल्य

अ.नं.	अभ्यास गट	माध्य	तालिका 't'- मूल्य		प्राप्त 't'-मूल्य
			df = 36का't'मूल्य		
			0.05सार्थकता स्तर	0.01सार्थकता स्तर	
1.	प्रयोगात्मक समूह	524.22	2.12	2.32	6.04
2.	नियंत्रित समूह	393.33			

निरीक्षण और विवेचन –

रेखाचित्र १० से यह स्पष्ट होता है की, नेतृत्व वर्तन विकास अध्ययन सन्च का अध्यापन मे अनुसरण से प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण गुणांक का 't'-मूल्य 0.05और 0.01 स्तर पर सार्थ है। प्रशिक्षणार्थियों के लिए अध्यापन मे अनुसरण किया गया नेतृत्व वर्तन विकास का अध्ययन सन्च परिणामकारक है।

5. निश्कर्श

अध्यापक महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों के प्रयोगात्मक गट के लिए उपयोग किया गया है, इसीम प्रमाणविचलन सम्बन्धगुणक और t संख्या अधिकत है। इसिलीए अध्ययन सन्च से प्रशिक्षणार्थियों के नेतृत्व विकास मे परिवर्तन दर्शाता है। अध्यापक महाविद्यालय कराड का। मूल्य अन्य स ी अध्यापक महाविद्यालय इचलकरंजी का। मूल्य सबसे कम है।

6. संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Leadership & Organizational development Journal Vol.26 No.6 P.442-457
[2]. Rathi,N.and Rastogi,R(2008) Effect of Emotional Intelligence on occupational self Efficacy. TheICFAI Journal of organizational behavior 7(2) 46-56
[3]. Sridhar, Y.N. and Razavi H.R. (2008) Teachers efficacy in different Management Types of secondaryschool,Journal of All India Association for Education research 20(1&2) 76-78
[4]. Nilgun,Yenice (2009) ,Search of science Teacher's Teacher efficacy and self efficacy levels relatingto science Teaching for some variables, procedia social and behavioral sciences 1.1062-1067
[5]. Rao,K.S.and Haseena, s.(2009) Self Efficacy among Primary school Teacher, IndianPsychological Review, 72(3),173-178
[6]. Hameed,A. and Manjusha, M.(2010) Teacher efficacy of secondary school teachers in relation toteaching styles and organizational culture Edusearch, 1(1),64-70
[7]. International refered research Journal, Nov. 2011 issn-0975-3486 RNI Rajbil 2009/30097 vol.iiiIssue 26 Page 44-45